

महावीरा कृषि समाचार

YEAR 3 | EDITION 6

अक्टूबर, 2025

www.rmphosphates.com

एग्रीकल्चर News:

फसल, फल और कृषि उपकरण, 12 से 5% GST स्लैब में आए ये सामान, किसानों के लिए अब कम होगी खेती की लागत:

22 सितंबर 2025 से खेती-किसानी से जुड़े कई सामानों पर जीएसटी की दरें कम हो चुकी हैं। इनमें ट्रैक्टर, कीटनाशक, मछली पालन, शहद और तेंदू पत्ता समेत कई सामान व उत्पाद हैं जिन पर टैक्स की दरें 12 फीसदी से घटकर 5 प्रतिशत हो चुकी हैं। टैक्स की दरों में इस कटौती से किसानों को बड़ी राहत मिलेगी और खेती की लागत कम होगी।



सरकार ने खेती-किसानी से जुड़े सामानों पर भी टैक्स की दरों को कम किया है। जीएसटी सुधारों का प्रभाव छोटे और मध्यम किसानों पर व्यापक रूप से दिखाई देगा। क्योंकि, कृषि मशीनरी और सौर ऊर्जा से चलने वाले उपकरणों पर कम जीएसटी से खेती की लागत कम होगी और किसानों का मुनाफा बढ़ेगा।



तुरंत एक्सपर्ट कृषि सलाह व समाधान पाये,
आज ही हमसे कॉल द्वारा जुड़े :

8956926412



प्याज की प्रगतिशील खेती

प्याज की प्रगतिशील खेती का मतलब है - आधुनिक तकनीकों, वैज्ञानिक विधियों, फसल चक्र, जल प्रबंधन, और विपणन के उन्नत तरीकों का उपयोग कर अधिक उत्पादन और अधिक मुनाफा प्राप्त करना।



जलवायु एवं मृदा

- प्याज को ठंडी जलवायु में अंकुरण और गर्म व शुष्क जलवायु में कंद (bulb) बनने के लिए आदर्श माना जाता है।
- अच्छी जलनिकासी वाली, दोमट या बलुई दोमट मिट्टी (pH 6-7) सर्वोत्तम होती है।
- भारी मिट्टी से बचें, क्योंकि पानी रुकने से कंद सड़ सकते हैं।

उन्नत किस्में

इन किस्मों का चुनाव क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र की सिफारिश पर करें।

मौसम	बुवाई समय	बीज मात्रा (प्रति हेक्टेयर)
खरीफ	मई-जून	8-10 किलो
रबी	अक्टूबर-नवंबर	10-12 किलो
जायद	जनवरी-फरवरी	10-12 किलो

सिंचाई प्रबंधन

- प्याज को प्रारंभिक 20-25 दिन तक ज्यादा पानी की ज़रूरत नहीं होती।
- फिर हर 7-10 दिन में सिंचाई करें।
- कंद बनने के समय नियमित सिंचाई जरूरी है।
- कटाई से 10 दिन पहले सिंचाई बंद कर दें।



कटाई और भंडारण

- जब 70-80% पत्तियाँ सूख जाएँ, तब कटाई करें।
- प्याज को 4-5 दिन छायादार स्थान पर सुखाएँ।
- भंडारण के लिए टोकरी या जालीदार बोरे में रखें ताकि हवा आ-जासके।
- भंडारण के लिए "Bhima Shubhra" जैसी सफेद प्याज किस्में उपयुक्त होती हैं।

सामान्य रूप से प्याज की प्रति एकड़ उपज:

खेती का प्रकार	परंपरागत खेती	प्रगतिशील / उन्नत खेती
खरीफ	80-100 क्विंटल	160-200 क्विंटल
रबी	60-80 क्विंटल	120-150 क्विंटल
जायद	70-90 क्विंटल	130-160 क्विंटल



खाद और उर्वरक

प्याज की फसल में पोषक तत्वों का प्रबंधन (अनुशंसित उर्वरक की मात्रा - KG 40:24-32:20)

अवधि	Mahaveera Ziron Power Plus	MOP	Urea	Symtron	Amitron-Z	Baleco	Ferochi	Mgso4
	KG	KG	KG	KG	ML	ML	KG	KG
बुवाई के समय	150	30	45	4	0	0	1	0
25-30 दिन बाद में	0	0	20	0	0	200	0	25
50-55 दिन बाद में	0	0	22	0	250	0	0	0
कुल मात्रा	150	30	87	4	250	200	1	25
जल घुलनशील उर्वरक 4-5 ग्राम प्रति लीटर पानी में	45-50 दिन की अवधि में 12:61:00 का 50-55 दिन की अवधि में CN+B + 00:52:34 का तथा 80-85 दिन की अवधि में 13:00:45 या 00:00:50 का एक छिड़काव अवश्य करें							

फसल चक्र अपनाएँ: प्याज के बाद दलहनी फसल ले, जिससे कीट और रोगों का नियंत्रण होता है।

अतिरिक्त प्रगतिशील उपाय:

- फसल बीमा योजना और PM-Kisan जैसी सरकारी योजनाओं का लाभ ले।
- जैविक खेती या GAP (Good Agricultural Practices) को अपनाकर एक्सपोर्ट का रास्ता खुल सकता है।
- AI आधारित खेत निगरानी एप्स (Krishi Network, CropIn, Kisan Suvidha) का प्रयोग करें।

महावीरा एग्री एड्वाइज़री

प्याज में बैंगनी धब्बा रोग की जानकारी बताए ?

यह रोग मुख्य रूप से पौधे के ऊपरी भाग में होता है। पत्तियों से संक्रमण शुरू होता है, पत्तियों पर सफेद छोटे-छोटे बिंदु और अनिमित्त क्लोरोटिक क्षेत्र बन जाते हैं। पत्तियों पर गोलाकार से आयताकार जैसे मखमली छल्ले दिखाई देने लगते हैं। क्लोरोटिक क्षेत्र में घाव विकसित होते हैं जिस कारण पत्ती के धब्बे एक साथ जुड़ें हुए और तेजी से फैलते हुए पूरी पत्तियों को ढक लेते हैं और पत्तियाँ धीरे-धीरे मर जाती हैं।



प्याज में सफेद गलन रोग के बारे में जानकारी दे ?

इस रोग के कारण जमीन के समीप प्याज का ऊपरी भाग गलने लगता है और संक्रमित भाग पर सफेद फफूंद और जमीन के ऊपर हलके भूरे रंग के सरसों के दाने की तरह सख्त संरचनाये बन जाती है उसे स्कलेरोटिक कहते हैं। इसमें संक्रमित पौधा मुरझा जाता है और बाद में सूख जाता है। जिसमें कंद चारों तरफ से सफेद फफूंद से ढक जाते हैं। आखिर में पौधा पूर्ण रूप से सूख जाता है।



प्याज की फसल में रोगों के प्रबंधन के उपाय बताए ?

- **फसल चक्रण:** हर साल एक ही खेत में प्याज न उगाएं, जिससे मिट्टी में रोगों के जमाव को रोका जा सके।
- **प्रमाणित बीज:** रोग प्रतिरोधी किस्मों और रोगमुक्त बीजों का उपयोग करें।
- **कंदों का भंडारण:** खुदाई के बाद कंदों को सुरक्षित और उचित तापमान पर संग्रहित करें।
- **कीटनाशकों का प्रयोग:** रोपाई के बाद मैन्कोज़ेब जैसे कवकनाशी का प्रयोग करें।
- **मिट्टी की गुणवत्ता:** मिट्टी में कॉपर जैसे तत्वों की कमी होने पर कॉपर उर्वरकों का प्रयोग करें।
- **स्वच्छता:** खेत से संक्रमित पौधों के मलबे को हटाकर नष्ट कर दें।



कंडवा रोग (अनावृत कंड रोग) के बारे में जानकारी दीजिए ?

कंडवा रोग, जिसे अनावृत कंड या लूज स्मट भी कहते हैं। यह एक फफूंद जनित रोग है जो गेहूं, जौ, गन्ना और धान जैसी फसलों को प्रभावित करता है। यह रोग मुख्य रूप से संक्रमित बीजों से फैलता है और फसल को भारी नुकसान पहुँचा सकता है।

महावीरा उत्पादन के साथ प्याज की फसल बनाएँ बेहतर



महावीरा यशोगाथा

बालासहेब गोरक्षनाथ
अहमदनगर, महाराष्ट्र
फसल- प्याज
प्रोडक्ट- महावीरा ज़िरोन



इस वर्ष मैंने अपनी प्याज की फसल में बुवाई के समय महावीरा ज़िरोन का इस्तेमाल किया परिणाम बेहद शानदार मिले। महावीरा ज़िरोन में मौजूद फॉस्फोरस, ज़िंक, बोरॉन, कैल्शियम और सल्फर ने मेरी फसल को न केवल स्वस्थ और मजबूत बनाया बल्कि रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ाई। प्याज के कंद और भी ज्यादा चमकदार, भारी और आकर्षक बने। मैं इस परिणाम से बेहद खुश हूँ और सभी किसान भाइयों को सलाह दूंगा कि वे कम से कम एक बार महावीरा ज़िरोन का उपयोग अवश्य करें और खुद फर्क देखें।

अभिषेक जाट
देवास, मध्य प्रदेश
फसल- प्याज
प्रोडक्ट- महावीरा ज़िरोन



मैं हर साल अपनी प्याज की फसल में महावीरा ज़िरोन का उपयोग करता हूँ और हर बार परिणाम बेहद शानदार मिलते हैं। कंद ज्यादा चमकदार और भारी बनते, जिससे उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। दूसरे खादों की तुलना में महावीरा ज़िरोन कहीं बेहतर परिणाम दिए। मैं इस अनुभव से बहुत खुश हूँ और सभी किसान भाइयों से कहना चाहता हूँ कि महावीरा ज़िरोन का उपयोग कम से कम एक बार जरूर करिए और उन्नति की ओर बढ़िए।



आर एम फॉस्फेट्स एण्ड केमिकल्स प्रा. लि.
आप सभी के लिए ले आया है अब

पहले से और भी ज्यादा शक्तिशाली उत्पाद!

